तुम्हारा भटकना अब बंद हुआ
बाप ने 84 जन्मों का ज्ञान दिया
निराकार और साकार बाप को जाना
ज्ञान से तुम्हें अब अच्छी जागृति मिली
ईश्वर की गत मत न्यारी गायी
वो ही करते सर्व की सद्गति
पूज्य से पुजारी बनाते
याद से कर्मबंधन काटने
ध्यान दीदार की आश नही रखनी
बाप से हर बात में राय लेनी
कोई भूल नही करनी
मास्टर ज्ञान सूर्य के स्वमान में रहना
शुभ भावना व शुभ कामना के आधार
से शांति और शक्ति की किरणे विश्व को देना
मैंपन और मेरापन है देह-अभिमान का दरवाज़ा
इस दरवाज़े को सदा बंद रखना

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!